'प्रो. वासुदेव सिंह स्मृति न्यास' द्वारा
२७ जनवरी, २०२२ को आभासी माध्यम से आयोजित
'प्रो. वासुदेव सिंह स्मृति संगोष्ठी' का विवरण

प्रो0 वासुदेव सिंह स्मृति न्यास की ओर से उनकी 15वीं पुण्यतिथि पर ऑनलाइन संगोष्ठी सम्पन्न

हर बात ब्यूरो

प्रयागराज। हिन्दी के सुप्रतिष्ठित साहित्यकार, समीक्षक, शिक्षक, अनुसंधायक, इतिहासवेत्ता, कोशकार और भाष्यकार प्रो. वासुदेव सिंह की पन्द्रहवीं पुण्यतिथि पर 'प्रो. वासुदेव सिंह स्मृति न्यास' की ओर से आयोजित संगोष्ठी 'स्वाधीनता आंदोलन का अमृत महोत्सव और पत्रकारिता का प्रदेय' में बोलते हुए भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली के महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी ने कहा कि हम आजाद भारत के एक ऐतिहासिक कालखण्ड से वाकिफ हो रहे हैं। आजादी के लिए हजारों भारतीय तपस्यारत रहे। आजादी का अमृत महोत्सव मनाना हमारे लिए गौरव का विषय है। पत्रकारिता दुनिया के सबसे पुराने कार्यों में से एक है। समाज में तीव्र परिवर्तन पत्रकारिता से ही सम्भव है। पत्रकारिता का उद्देश्य आम नागरिकों के हितों की रक्षा करना है। स्वतंत्रता आन्दोलन के समय से ही मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, इसीलिए मीडिया को बड़े विश्वास से लोग देखते हैं। आज सूचना प्रौद्योगिकी ने पूरी दुनिया को बदल कर रख दिया है। मौजूदा समय बदलाव का समय है। आज सकारात्मक खबरों की जरूरत है। सोशल मीडिया के दौर में सूचना और समाचार में अन्तर को हमें समझना पड़ेगा। सूचना पत्रकारिता नहीं है। उन्होंने पत्रकारिता के ऐतिहासिक पहलू पर भी प्रकाश डाला। वरिष्ठ पत्रकार राहुल देव ने अपने उद्बोधन में कहा कि हर क्षण अपने सफर का आकलन कर लेना चाहिए। सोशल मीडिया के स्याह पक्ष भी हैं। सोशल मीडिया की प्रवृत्ति अनियंत्रणीय है। पोस्ट ट्रूथ के इस युग में फैक्ट चेकर्स भी आ गए हैं, जिसका उपयोग करना हमें आना चाहिए। आज मुख्य मीडिया में एक बड़ा हिस्सा प्रचारकारिता और दूसरा हिस्सा विरोधकारिता कर रहा है। मीडिया में स्वस्थ प्रतिद्वंद्विता होनी चाहिए। भारतीयों को बहुलताओं और विविधताओं में जीने की आदत ही उसकी विशिष्टता है। राहुल देव ने भारत की कई चुनौतियों को बताते हुए कहा कि हिन्दू-मुस्लिम, अगड़ा-पिछड़ा-दलित आदि विभाजनकारी रेखाएँ हैं। आज के भारत के प्रदेय से ही पत्रकारिता का प्रदेय तय होगा। प्रो. उमापति दीक्षित ने कहा कि स्वाधीनता आन्दोलन के समय पत्रकारिता अपने अमृत रूप में थी। पहले खबर को बताना पत्रकारिता थी, आज अपने अनुकूल खबर को बताना और छिपाना ही पत्रकारिता हो गई है। लेकिन सत्य एक ऐसा विस्फोट है, जो बाहर आएगा ही। अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय, भोपाल के कुलपति प्रो. खेम सिंह डहेरिया ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि पत्रकारिता का जो स्वरूप स्वतंत्रता के पूर्व था, उसमें निरन्तर ह्रास हो रहा है। बाजारवाद के प्रभाव ने उसके आदर्श और मौलिक स्वरूप को विकृत कर दिया है। आज मीडिया द्वारा सत्य नहीं, स्वाद परोसा जा रहा है। पत्रकारिता सत्ता पर बैठाने और उतारने का माध्यम बनने लगी है। कार्यक्रम में प्रो. वासुदेव सिंह स्मृति न्यास के सचिव डॉ. हिमांशु शेखर सिंह ने न्यास के कार्यों पर प्रकाश डाला। स्वागत-भाषण सुधांशु शेखर सिंह तथा संचालन प्रो. श्रद्धा सिंह और मानवेन्द्र प्रताप सिंह ने किया। इस अवसर पर यूजीसी केयर में शामिल शोध पत्रिका 'नमन' का विमोचन भी किया गया। संगोष्ठी में प्रो. शिवप्रसाद शुक्ल, प्रो. सुधाकर सिंह, डॉ. किरण सिंह, डॉ. भारती सिंह, डॉ. संध्या द्विवेदी, डॉ. वसुन्धरा उपाध्याय, डॉ. अलीम खान, डॉ. प्रीति सिंह, पंकज कुमार यादव, डॉ. विष्णु प्रसाद शुक्ल, भूप नारायण सहित पत्रकारिता एवं हिन्दी साहित्य के प्रबुद्धजन और शोधछात्रों ने बड़ी संख्या में सहभागिता की।

मीडिया में स्वस्थ प्रतिद्वंद्विता होनी चाहिए

प्रो0 वासुदेव सिंह स्मृति न्यास की ओर से उनकी 15वीं पुण्यतिथि पर ऑनलाइन संगोष्ठी सम्पन्न

मुकतेश्वर दूबे

प्रयागराज। हिन्दी के सुप्रतिष्ठित साहित्यकार, समीक्षक, शिक्षक, अनुसंधायक, इतिहासवेत्ता, कोशकार और भाष्यकार प्रो. वासुदेव सिंह की पन्द्रहवीं पुण्यतिथि पर प्रो. वासुदेव सिंह स्मृति न्यास की ओर से आयोजित संगोष्ठी स्वाधीनता आंदोलन का अमृत महोत्सव और पत्रकारिता का प्रदेय में बोलते हुए भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली के महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी ने कहा कि हम आजाद भारत के एक ऐतिहासिक कालखण्ड से वाकिफ हो रहे हैं। आजादी के लिए हजारों भारतीय तपस्यारत रहे। आजादी का अमृत महोत्सव मनाना हमारे लिए गौरव का विषय है। पत्रकारिता दुनिया के सबसे पुराने कार्यों में से एक है। समाज में तीव्र परिवर्तन पत्रकारिता से ही सम्भव है। पत्रकारिता का उद्देश्य आम नागरिकों के हितों की रक्षा करना है। स्वतंत्रता आन्दोलन के समय से ही मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, इसीलिए मीडिया को बड़े विश्वास से लोग देखते हैं। आज सूचना प्रौद्योगिकी ने पूरी दुनिया को बदल कर रख दिया है। आज सकारात्मक खबरों की जरूरत है। सोशल मीडिया के दौर में सूचना और समाचार में अन्तर को हमें समझना पड़ेगा। सूचना पत्रकारिता नहीं है। उन्होंने पत्रकारिता के ऐतिहासिक पहलू पर भी प्रकाश डाला। वरिष्ठ पत्रकार श्री राहुल देव ने अपने उद्बोधन में कहा कि हर क्षण अपने सफर का आकलन कर लेना चाहिए। सोशल मीडिया के स्याह पक्ष भी हैं। सोशल मीडिया की प्रवृत्ति अनियंत्रणीय है। पोस्ट ट्रूथ के इस युग में फैक्ट चेकर्स भी आ गए हैं, जिसका उपयोग करना हमें आना चाहिए। आज मुख्य मीडिया में एक बड़ा हिस्सा प्रचारकारिता और ... मीडिया में स्वस्थ प्रतिद्वंद्विता होनी चाहिए। भारतीयों को बहुलताओं और विविधताओं में जीने की आदत ही उसकी विशिष्टता है। श्री राहुल देव ने भारत की कई चुनौतियों को बताते हुए कहा कि हिन्दू-मुस्लिम, अगड़ा-पिछड़ा-दलित आदि विभाजनकारी रेखाएँ हैं। आज के भारत के प्रदेय से ही पत्रकारिता का प्रदेय तय होगा। प्रो. उमापति दीक्षित ने कहा कि स्वाधीनता आन्दोलन के समय पत्रकारिता अपने अमृत रूप में थी। पहले खबर को बताना पत्रकारिता थी, आज अपने अनुकूल खबर को बताना और छिपाना ही पत्रकारिता हो गई है। ... बाहर आएगा ही। अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय, भोपाल के कुलपति प्रो. खेम सिंह डहेरिया ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि पत्रकारिता का जो स्वरूप स्वतंत्रता के पूर्व था, उसमें निरन्तर ह्रास हो रहा है। बाजारवाद के प्रभाव ने उसके आदर्श और मौलिक स्वरूप को विकृत कर दिया है। आज मीडिया द्वारा सत्य नहीं, स्वाद परोसा जा रहा है। पत्रकारिता सत्ता पर बैठाने और उतारने का माध्यम बनने लगी है। कार्यक्रम में प्रो. वासुदेव सिंह स्मृति न्यास के सचिव डॉ. हिमांशु शेखर सिंह ने न्यास के कार्यों पर प्रकाश डाला। स्वागत-भाषण श्री सुधांशु शेखर सिंह तथा संचालन प्रो. श्रद्धा सिंह और मानवेन्द्र प्रताप सिंह ने किया। इस अवसर पर यूजीसी केयर में शामिल शोध पत्रिका नमन का विमोचन भी किया गया। संगोष्ठी में प्रो. शिवप्रसाद शुक्ला, प्रो. सुधाकर सिंह, डॉ. किरण सिंह, डॉ. भारती सिंह, डॉ. संध्या द्विवेदी, डॉ. वसुन्धरा उपाध्याय, डॉ. अलीम खान, डॉ. प्रीति सिंह, पंकज कुमार यादव, डॉ. विष्णु प्रसाद शुक्ल, भूप नारायण सहित पत्रकारिता एवं हिन्दी साहित्य ...

मीडिया में स्वस्थ प्रतिद्वंद्विता होनी चाहिए

प्रो0 वासुदेव सिंह स्मृति न्यास की ओर से उनकी 15वीं पुण्यतिथि पर ऑनलाइन संगोष्ठी सम्पन्न

प्रयागराज। हिन्दी के सुप्रतिष्ठित साहित्यकार, समीक्षक, शिक्षक, अनुसंधायक, इतिहासवेत्ता, कोशकार और भाष्यकार प्रो. वासुदेव सिंह की पन्द्रहवीं पुण्यतिथि पर 'प्रो. वासुदेव सिंह स्मृति न्यास' की ओर से आयोजित संगोष्ठी 'स्वाधीनता आंदोलन का अमृत महोत्सव और पत्रकारिता का प्रदेय' में बोलते हुए भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली के महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी ने कहा कि हम आजाद भारत के एक ऐतिहासिक कालखण्ड से वाकिफ हो रहे हैं। आजादी के लिए हजारों भारतीय तपस्यारत रहे। आजादी का अमृत महोत्सव मनाना हमारे लिए गौरव का विषय है। पत्रकारिता दुनिया के सबसे पुराने कार्यों में से एक है। समाज में तीव्र परिवर्तन पत्रकारिता से ही सम्भव है। पत्रकारिता का उद्देश्य आम नागरिकों के हितों की रक्षा करना है। स्वतंत्रता आन्दोलन के समय से ही मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, इसीलिए मीडिया को बड़े विश्वास से लोग देखते हैं। आज सूचना प्रौद्योगिकी ने पूरी दुनिया को बदल कर रख दिया है। मौजूदा समय बदलाव का समय है। आज सकारात्मक खबरों की जरूरत है। सोशल मीडिया के दौर में सूचना और समाचार में अन्तर को हमें समझना पड़ेगा। सूचना पत्रकारिता नहीं है। उन्होंने पत्रकारिता के ऐतिहासिक पहलू पर भी प्रकाश डाला।

वरिष्ठ पत्रकार राहुल देव ने अपने उद्बोधन में कहा कि हर क्षण अपने सफर का आकलन कर लेना चाहिए। सोशल मीडिया के स्याह पक्ष भी हैं। सोशल मीडिया की प्रवृत्ति अनियंत्रणीय है। पोस्ट ट्रूथ के इस युग में फैक्ट चेकर्स भी आ गए हैं, जिसका उपयोग करना हमे आना चाहिए। आज मुख्य मीडिया मे एक बड़ा हिस्सा प्रचारकारिता और दूसरा हिस्सा विरोधकारिता कर रहा है। मीडिया मे स्वस्थ प्रतिद्वंद्विता होनी चाहिए। भारतीयों को बहुलताओं और विविधताओं में जीने की आदत ही उसकी विशिष्टता है। श्री राहुल देव ने भारत की कई चुनौतियों को बताते हुए कहा कि हिन्दू-मुस्लिम, अगड़ा-पिछड़ा-दलित आदि विभाजनकारी रेखाएँ हैं। आज के भारत के प्रदेय से ही पत्रकारिता का प्रदेय तय होगा। प्रो. उमापति दीक्षित ने कहा कि स्वाधीनता आन्दोलन के समय पत्रकारिता अपने अमृत रूप में थी। पहले खबर को बताना पत्रकारिता थी, आज अपने अनुकूल खबर को बताना और छिपाना ही पत्रकारिता हो गई है। लेकिन सत्य एक ऐसा विस्फोट है, जो बाहर आएगा ही।

अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय, भोपाल के कुलपति प्रो. खेम सिंह डहेरिया ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन मे कहा कि पत्रकारिता का जो स्वरूप स्वतंत्रता के पूर्व था, उसमें निरन्तर ह्रास हो रहा है। बाजारवाद के प्रभाव ने उसके आदर्श और मौलिक स्वरूप को विकृत कर दिया है। आज मीडिया द्वारा सत्य नहीं, स्वाद परोसा जा रहा है। पत्रकारिता सत्ता पर बैठाने और उतारने का माध्यम बनने लगी है। कार्यक्रम में प्रो. वासुदेव सिंह स्मृति न्यास के सचिव डॉ. हिमांशु शेखर सिंह ने न्यास के कार्यों पर प्रकाश डाला। स्वागत-भाषण श्री सुधांशु शेखर सिंह तथा संचालन प्रो. श्रद्धा सिंह और मानवेन्द्र प्रताप सिंह ने किया। इस अवसर पर यूजीसी केयर में शामिल शोध पत्रिका 'नमन' का विमोचन भी किया गया। संगोष्ठी में प्रो. शिवप्रसाद शुक्ला, प्रो. सुधाकर सिंह, डॉ. किरण सिंह, डॉ. भारती सिंह, डॉ. संध्या द्विवेदी, डॉ. वसुन्धरा उपाध्याय, डॉ. अलीम खान, डॉ. प्रीति सिंह, पंकज कुमार यादव, डॉ. विष्णु ...

मीडिया में होनी चाहिए स्वस्थ प्रतिस्पर्धा

झूंसी। हिंदी के वरिष्ठ साहित्यकार प्रोफेसर वासुदेव सिंह की पंद्रहवीं पुण्यतिथि के मौके पर प्रोफेसर वासुदेव सिंह स्मृति न्यास की ओर से संगोष्ठी का आयोजन किया गया। स्वाधीनता आंदोलन का अमृत महोत्सव और पत्रकारिता का प्रदेय विषय पर भारतीय जनसंचार संस्थान नई दिल्ली के महानिदेशक प्रोफेसर संजय द्विवेदी ने कहा कि हम आजाद भारत के एक ऐतिहासिक कालखंड से वाकिफ हो रहे हैं। मीडिया में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा होनी चाहिए।

वरिष्ठ पत्रकार राहुल देव ने कहा कि हर क्षण अपने सफर का आकलन कर लेना चाहिए। सोशल मीडिया के स्याह पक्ष भी हैं। सोशल मीडिया की प्रवृत्ति अनियंत्रणीय है। पोस्ट ट्रूथ के इस युग में फैक्ट चेकर्स भी आ गए हैं, जिसका उपयोग करना हमें आना चाहिए। राहुल देव ने भारत की कई चुनौतियों को बताते हुए कहा कि हिन्दू-मुस्लिम, अगड़ा-पिछड़ा-दलित आदि विभाजनकारी रेखाएं हैं।

आज के भारत के प्रदेय से ही पत्रकारिता का प्रदेय तय होगा। प्रोफेसर उमापति दीक्षित ने कहा कि स्वाधीनता आंदोलन के समय पत्रकारिता अपने अमृत रूप में थी। पहले खबर को बताना पत्रकारिता थी। आज अपने अनुकूल खबर को बताना और छिपाना ही पत्रकारिता हो गई है। संवाद

दुनिया के सबसे पुराने कार्यों में से एक पत्रकारिता : प्रो. संजय द्विवेदी

वाराणसी। हिन्दी के सुप्रतिष्ठित साहित्यकार, समीक्षक, शिक्षक, अनुसंधायक, इतिहासवेत्ता, कोशकार और भाष्यकार प्रो. वासुदेव सिंह की 15वीं पुण्यतिथि पर 'प्रो. वासुदेव सिंह स्मृति न्यास' की ओर से बृहस्पतिवार को 'स्वाधीनता आंदोलन का अमृत महोत्सव और पत्रकारिता का प्रदेय' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली के महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी ने कहा कि हम आजाद भारत के एक ऐतिहासिक कालखंड से वाकिफ हो रहे हैं। आजादी के लिए हजारों भारतीय तपस्यारत रहे। आजादी का अमृत महोत्सव मनाना हमारे लिए गौरव का विषय है। कहा कि पत्रकारिता दुनिया के सबसे पुराने कार्यों में से एक है। उन्होंने पत्रकारिता के ऐतिहासिक पहलू पर भी प्रकाश डाला। वरिष्ठ पत्रकार राहुल देव ने कहा कि हर क्षण अपने सफर का आकलन कर लेना चाहिए। सोशल मीडिया के स्याह पक्ष भी है। प्रो. उमापति दीक्षित ने कहा कि स्वाधीनता आन्दोलन के समय पत्रकारिता अपने अमृत रूप में थी। अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय, भोपाल के कुलपति प्रो. खेम सिंह डहेरिया ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि पत्रकारिता का जो स्वरूप स्वतंत्रता के पूर्व था, उसमें निरन्तर ह्रास हो रहा है। पत्रकारिता सत्ता पर बैठाने और उतारने का माध्यम बनने लगी है। कार्यक्रम में न्यास सचिव डा. हिमांशु शेखर सिंह ने न्यास के कार्यों पर प्रकाश डाला। स्वागत सुधांशु शेखर सिंह तथा संचालन प्रो. श्रद्धा सिंह और मानवेन्द्र प्रताप सिंह ने संयुक्त रूप से किया। संगोष्ठी में प्रो. शिवप्रसाद शुक्ला, प्रो. सुधाकर सिंह, डा. किरण सिंह, डा. भारती सिंह, डा. संध्या द्विवेदी, डा. वसुन्धरा उपाध्याय, डा. अलीम खान, डा. प्रीति सिंह, पंकज कुमार यादव, डा. विष्णु प्रसाद शुक्ल, भूप नारायण आदि शामिल रहे।

प्रो. वासुदेव सिंह की 15 वीं पुण्यतिथि पर ऑनलाइन हुई संगोष्ठी

झूंसी (प्रयागराज)। हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार, समीक्षक, शिक्षक, इतिहासवेत्ता, कोशकार और भाष्यकार प्रोफेसर वासुदेव सिंह की पंद्रहवीं पुण्यतिथि के मौके पर प्रोफेसर वासुदेव सिंह स्मृति न्यास की ओर से संगोष्ठी का आयोजन किया गया। स्वाधीनता आंदोलन का अमृत महोत्सव और पत्रकारिता का प्रदेय विषय पर बोलते हुए भारतीय जनसंचार संस्थान नई दिल्ली के महानिदेशक प्रोफेसर संजय द्विवेदी ने कहा कि हम आजाद भारत के एक ऐतिहासिक कालखंड से वाकिफ हो रहे हैं। आजादी के लिए हजारों भारतीय तपस्यारत रहे। आजादी का अमृत महोत्सव मनाना हमारे लिए गौरव का विषय है।

समाज में परिवर्तन पत्रकारिता से ही संभव

प्रो. वासुदेव सिंह स्मृति न्यास की ओर से 15वीं पुण्यतिथि पर ऑनलाइन संगोष्ठी

वाराणसी (काशीवार्ता)। हिन्दी के सुप्रतिष्ठित साहित्यकार, समीक्षक, शिक्षक प्रो. वासुदेव सिंह की 15वीं पुण्यतिथि पर 'प्रो. वासुदेव सिंह स्मृति न्यास' की ओर से आयोजित संगोष्ठी "स्वाधीनता आंदोलन का अमृत महोत्सव और पत्रकारिता का प्रदेय" में बोलते हुए भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली के महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी ने कहा कि हम आजाद भारत के एक ऐतिहासिक कालखण्ड से वाकिफ हो रहे हैं। आजादी का अमृत महोत्सव मनाना हमारे लिए गौरव का विषय है। पत्रकारिता दुनिया के सबसे पुराने कार्यों में से एक है। समाज में तीव्र परिवर्तन पत्रकारिता से ही सम्भव है। पत्रकारिता का उद्देश्य आम नागरिकों के हितों की रक्षा करना है। स्वतंत्रता आन्दोलन के समय से ही मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, इसीलिए मीडिया को बड़े विश्वास से लोग देखते हैं। वरिष्ठ पत्रकार राहुल देव ने कहा कि हर क्षण अपने सफर का आकलन कर लेना चाहिए। सोशल मीडिया के स्याह पक्ष भी हैं। सोशल मीडिया की प्रवृत्ति अनियंत्रणीय है। पोस्ट ट्रूथ के इस युग मे फैक्ट चेकर्स भी आ गए हैं, जिसक[ा] उपयोग करना हमें आना चाहिए। प्रो[.] उमापति दीक्षित ने कहा कि स्वाधीनत[ा] आन्दोलन के समय पत्रकारिता अपने अमृत रूप में थी। पहले खबर को बतान[ा] पत्रकारिता थी, आज अपने अनुकूल खबर को बताना और छिपाना ह[ी] पत्रकारिता हो गई है।

लेकिन सत्य एक ऐसा विस्फोट है, जो बाहर आएगा ही। आज मीडिया द्वारा सत्य नहीं, स्वाद परोसा जा रहा है। पत्रकारिता सत्ता पर बैठाने और उतारने का माध्यम बनने लगी है। कार्यक्रम में प्रो. वासुदेव सिंह स्मृति न्यास के सचिव डॉ. हिमांशु शेखर सिंह ने न्यास के कार्यों पर प्रकाश डाला। स्वागत-भाषण श्री सुधांशु शेखर सिंह तथा संचालन प्रो. श्रद्धा सिंह और मानवेन्द्र प्रताप सिंह ने किया। इस अवसर पर यूजीसी केयर में शामिल शोध पत्रिका 'नमन' का विमोचन भी किया गया। संगोष्ठी में प्रो. शिवप्रसाद शुक्ला, प्रो. सुधाकर सिंह, डॉ. किरण सिंह, डॉ. भारती सिंह, डॉ. संध्या द्विवेदी, डॉ. वसुन्धरा उपाध्याय, डॉ. अलीम खान, डॉ. प्रीति सिंह व हिन्दी साहित्य के प्रबुद्धजन और शोधछात्रों ने बड़ी संख्या में सहभागिता की।

'प्रो. वासुदेव सिंह स्मृति न्यास' द्वारा
२७ जनवरी, २०२२ को आभासी माध्यम से आयोजित
'प्रो. वासुदेव सिंह स्मृति संगोष्ठी' के छायाचित्र